शिवताण्डव स्तोत्रम्

भाषा टीका सहितम् ।

प्रकाशक-फर्म बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

सन् १९४१ राजादरवाजा बनारस सिटी । मूल्य -)

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

* श्रीः *

रावण कृतं-

शिवताण्डव स्तोत्रम् ।

भाषा टीका सहितम् ।

टीकाकार—

पं० महाराज दीन दीक्षित ।

—*******—

प्रकाशक फर्म-

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी ।

श्री विश्वेश्वर प्रेस, बुलानाला काशी में मुद्रित ।

सन् १९४१ —०— मूल्य -)

सर्वाधिकार स्वरक्षित है)

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

शिवताण्डव स्तोत्रम्

रावणारिं नमस्कृत्य भक्तानामभयंकरम् ।
रावणस्य कृतेः कुर्वे भाषाटीकां सुखावहाम् ॥१॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपा-
वितस्थले गलेवलंब्यलंबिता
भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्। डमड्डु-
मड्डुमड्डुमन्निनादवड्डमर्वयं, च-
कार चण्डताण्डवं तनोतु नः
शिवः शिवम् ॥ १ ॥

भाषार्थ—लंकापति रावण अभीष्ट सिद्धि के निमित्त श्री शंकर जी महाराज से प्रार्थना करता है कि जो श्री महादेवजी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

के जटारूपी वन से गिरते हुए जल के प्रवाह से पवित्र कण्ठ में बड़े २ सर्पों की माला को लटका कर डमड् डमड् शब्द करने वाले डमरू को बजाते हुए ताण्डव नृत्य करते हैं वही श्रीमहादेव जी हमारा मंगल करें ॥ १ ॥

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिं-
पनिर्झरीबिलोलबीचिवल्लरीवि-
राजमानमूर्धनि । धगद्धगद्धग-
ज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशो-
रचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं
मम ॥ २ ॥

भाषार्थ–ताण्डव नृत्य के समय जटारूपी कूए में वेग से घूमती हुई भागीरथी की चञ्चल तरंग रूपलताओं से शोभायमान और धक् धक् शब्द सहित जलने वाली है अग्नि जिसमें ऐसे ललाट वाले तथा द्वितीया के चन्द्रमारूप शिर के आभूषण को धारण करने वाले श्री महादेवजी के विषे मेरी प्रतिक्षण

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प्रीति होवे ॥ २ ॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबं-
धुबंधुरस्फुरद्दृगन्तसंततिप्रमोद-
मानमानसे । कृपाकटाक्षधोर-
णीनिरुद्धदुर्धरापदिक्वचिद्दिगं-
बरे मनोविनोदमेतुवस्तुनि ॥३॥

भाषार्थ—पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती की क्रीड़ा के बंधन और अति रमणीय प्रकाशमान कृपा कटाक्षों से भक्तों को घोर आपत्ति को दूर करने वाले, बाणी से परे, नग्न रूप श्रीमहादेवजी के विषे मेरा मन आनन्द को प्राप्त होवै ॥ ३ ॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फ-
णामणिप्रभाकदम्ब कुंकुमद्रव-
प्रलिप्तदिग्वधूमुखे । मदांधसिं-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो-
विनोदमद्भुतं विभर्तु भूतभ-
र्त्तरि ॥ ४ ॥

भाषार्थ—जब नृत्य करने के समय जटाओं में विराजमान सर्पों के फणों की मणियों की चमकती हुई पीली कान्ति फैलती है और दिशाएँ पीली हों जाती हैं तब ऐसा प्रतीत होता है, मानों शिवजी ने दिगाङ्गनाओं के मुख पर केसर मल दिया है, ऐसे और मद से अन्ध जो गजासुर तिसके चर्म को ओढ़ कर परम शोभा को प्राप्त होने वाले श्रीमहादेवजी के विषे मेरा मन परम आनन्द को प्राप्त होवे ॥ ४ ॥

ललाटचत्त्वरज्ज्वलद्धनञ्ज-
यस्फुलिंगभानिपीतपञ्च सायकं
नमन्निलिंपनायकम् । सुधामयू-
खलेखया विराजमानशेखरम्

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

महः कपालिसम्पदे सरिज्जटाल-
मस्तु नः ॥ ५ ॥

भाषार्थ—जिन्होंने अपने मस्तकरूप अङ्गण में धक् धक् जलते हुए अग्नि के कण से कामदेव को भस्म कर दिया, जिनको ब्रह्माजी आदि देवताओं को अधिपति भी प्रणाम करते हैं, जिनका विशाल भाल चन्द्रमा की किरणों से विराज· मान रहता है, और जिनकी जटाओं में कल्याणकारिणी श्री गंगाजी निवास करती हैं ऐसे कपालधारी तजोमूर्ति सदाशिव हमें धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष रूप चारो सम्पत्ति देवें ॥ ५ ॥

सहस्रलोचन प्रभृत्यशेषले-
खशेखरप्रसूनधूलिधोरणी वि-
धूसरांघ्रिपीठभूः। भुजंगराज-
मालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै
चिराय जायतां चकोरबन्धुशे-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

खरः ॥ ६ ॥

भाषार्थ–जिन महादेवजी के चरण धरने की भूमि, इन्द्रादि देवताओं के मुकुटों के पुष्पमालाओं से गिरी हुई पराग से धूसर (मटमैली) रहती है जिनकी जटाजूट सर्पराज वासुकी की लपेटों से बँधा रहता है और जिनके विशाल भाल में चन्द्रमा विराजमान है ऐसे सदाशिव हमें धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष-रूपसम्पत्ति देवें ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्धग-
द्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्र-
चंडपंचसायके । धराधरेन्द्रन-
न्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक प्रक-
ल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने र-
तिर्मम ॥ ७ ॥

भाषार्थ–जिन महादेवजी ने अपने कराल भालरूपी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मैदान में धमकती हुई अग्नि में प्रबल कामदेव की आहुति दे दी जो हिमालयकुमारी श्रीपार्वती जी के स्तनों पर चित्रकारी करने में परम प्रवीण हैं। ऐसे त्रिलोचन महादेव जी के विषे मेरी प्रीति होवे ॥ ७ ॥

नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदु-
र्धरस्फुरत् कुहूनिशीथिनीतमः
प्रबन्धवद्धकन्धरः। निलिंपनि-
र्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरःक-
लानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्-
धुरंधरः ॥ ८ ॥

भाषार्थ–अमावस्या की अर्द्धरात्रि के समय स्वयं ही अन्धकार अधिक होता है और यदि उस समय नवीन मेघ-मण्डल घिर आवे तो और भी अधिक अन्धकार हो जाता है ऐसे घोर अन्धकार को भी जिनकी ग्रीवा निरादर करती है अर्थात् उस अन्धकार से भी अधिक काली है ऐसे गंगाधर,

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हस्ती के चर्म को ओढ़ने वाले चन्द्रभाल त्रिलोकी के पालन करने वाले सदाशिव हमारी सम्पदा को अधिक करें ॥ ८ ॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चका-
लिमप्रभा विलंबिकंठकन्दली-
रुचिप्रबद्धकन्धरम् । स्मरच्छिदं
पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांधकच्छिदन्तमंतक-
च्छिदं भजे ॥ ६ ॥

भाषार्थ—जिनके सुन्दर कण्ठ की परम रमणीय शोभा खिले हुए नीलकमल के चारों ओर फैली हुई नीलवर्ण कान्ति को निरादर करती है ऐसे कामदेव को भस्म करने वाले त्रिपुरारि, दक्ष के यज्ञ विध्वंसकारी, गजासुर संहारी, अन्धकासुर के नाशक कालान्तक शिवजी को मैं भजता हूँ ॥ ९ ॥

अखर्वसर्वमंगलाकलाकद-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

म्बमञ्जरी रसप्रवाहमाधुरीविजृं-
भणामधुव्रतम्। स्मरान्तकं पुरा-
न्तकं भवान्तकं मखान्तकं ग-
जांतकांधकांत कन्तमंतकांतकं
भजे ॥ १० ॥

भाषार्थ—सब प्रकार के मंगलों को अधिकता से देनेवाले चौंसठ कलारूप कदम्ब के वृक्ष के मञ्जरी का रस पीने वाले अर्थात् सर्वकला प्रवीण कामारि त्रिपुरारि भक्त भयहारी दक्ष यज्ञविध्वंसकारी गजासुर संहारी अन्धकासुर के हनन करने वाले और काल का भय मिटाने वाले महादेवजी का मैं भजन करता हूँ ॥ १० ॥

जयत्यदभ्रविभ्रमद्भुजं-
गमश्वसद्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्क-
राल भालहव्यवाट्। धिमिंधि-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धिमिंधिमिंध्वनन्मृदंगतुङ्गमंगल-
ध्वनिक्रमप्रवर्त्तित: प्रचण्डता-
ण्डव: शिव: || ११ ||

भावार्थ—नृत्य करते समय अधिक वेग से घूमने पर शिर में लिपटे हुए सर्पों के श्वास के निकलने से और भी अधिक प्रज्ज्वलित हुई है कराल भाल की अग्नि जिनकी और मृदंग धिमि धिमि मंगल ध्वनि की वृद्धि के अनुसार अपने ताण्डव नृत्य की गति को बढ़ाने वाले शिवजी महाराज की जय होवे || ११ ||

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौ-
क्तिकस्रजोर्गरिष्ठ रत्नलोष्ठयो:
सुहृद्विपक्षपक्षयो: । तृणारवि-
न्दचक्षुषो: प्रजामहीमहेन्द्रयो:

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥ १२ ॥

भाषार्थ—वह कौन सा शुभ समय होगा कि जिस समय में पत्थर और पुष्पों की शय्या में, सर्प और मोतियों की माला में, बहु मूल्य रत्न और मृत्तिका के ढेले में, शत्रु और मित्र में, तृण और नीलकमल के समान नेत्र वाली स्त्री में, तथा प्रजा चक्रवर्ती राजा में एकसी दृष्टि करके सदा शिव का भजन करूँगा ॥ १२ ॥

कदा निलिंपनिर्भरीनिकुञ्ज-
कोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा
शिरस्थमञ्जलिं वहन्। विलोल-
लोललोचनो ललामभालल-
ग्नकःशिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा
सुखी भवाम्यहम् ॥ १३ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भाषार्थ—वह कौन सा कल्याणकारक समय होगा, कि जिस समय मैं संपूर्ण दुर्वासनाओं को त्याग कर गंगातट के कुंज के विषय निवास करके अंजुली बाँधता हुआ चंचल नेत्र वाली स्त्रियों में रत्नरूप जगज्जननी माँ पार्वती जी को भी प्रारब्धवश प्राप्त (अर्थात् औरों को परम दुर्लभ) शिव शिव मंत्र का उच्चारण करता हुआ परम आनन्द को प्राप्त होऊँगा ॥ १३ ॥

निलिंपनाथनागरीकदम्ब-
मौलिमल्लिकानिगुंफनिर्भरक्षर-
न्मधूष्णिकामनोहरः। तनोतुनो
मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं प-
रश्रियः परं पदं तदंगजत्विषां
चयः ॥ १४ ॥

भाषार्थ—इन्द्रनगरी की अप्सराओं के शिर से गिरी हुई निवार पुष्पों की मालाओं के पराग की उष्णता से उत्पन्न

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

५८२५
शिव.
४२

हुए पसीने से शोभायमान, परम शोभा का सर्वोपरि स्थान और रात्रि दिन आनन्द देनेवाली जो सदाशिव के शरीर की कांतियों का समूह है सो हमारे मन के आनन्द को बढ़ावै।

प्रचण्डबाडवानलप्रभाशुभ-
प्रचारिणी महाऽष्टसिद्धिकामि-
नीजनावहूतजल्पनी। विमुक्त-
वामलोचनाविवाहकालिकध्व-
निः शिवेति मन्त्रभूषणं जग-
ज्जयाय जायताम् ॥ १५ ॥

भाषार्थ—भयदायक बड़वानल अग्नि के समान प्रभा तथा सनातन अमंगलों का नाश करने वाली अष्ट सिद्धियों सहित स्त्रियों ने गाए है गति जिसमें और शिव शिव यह मंत्र ही भूषण है जिसका ऐसी स्वयं मुक्तस्वभाव जगत् की माता पार्वती जी के विवाह समय की ध्वनि सन्सार की कल्याणकारिणी होवे ॥ १५ ॥

श्री लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

व्यवस्थापक-पं. चक्रधर जोशी

पूजावसानसमये दशवक्त्र-गीतम्। यःशम्भुपूजनमिदं पठ-तिप्रदोषे॥ तस्य स्थिरां रथगजे-न्द्रतुरंगयुक्तां। लक्ष्मींसदैवसु-मुखीं प्रददातिशंभुः॥

उन्नावप्रान्तस्थबरोड़ा ग्रामनिवासी पं० आनन्दमाधव-दीक्षितात्मज पं० महाराजदीन दीक्षित कृत भाषा टीका सहितं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीबालमुकुन्द पाण्डेयेन संशोधितम्

श्रीशिवार्पणमस्तु।

पं० श्रीलाल उपाध्याय द्वारा-श्रीविश्वेश्वर प्रेस, काशी में मुद्रित।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पूजा पाठ की पुस्तकें

नित्यकर्म पद्धति	=)	पार्थिवपूजन	)॥
महाविद्या स्तोत्र	)॥	प्रत्यंगिरा स्तोत्र	
बगलामुखी स्तोत्र	)॥	बटुकभैरव स्तोत्र	
वैरीनाशन कालीकवच	)॥	मृत्युञ्जय स्तोत्र	
रामरक्षा स्तोत्र	)॥	रामस्तुति	
चौबिस गायत्री	=)॥	रामस्तवराज	
शिवमहिम्न मूल	)॥	शिवताण्डव स्तोत्र	
शिवसहस्रनाम	=)	श्रीसूक्त पुरुषसूक्त	-)
हनुमानकवच एकमुखी	)॥	सन्तान गोपाल	)॥
हनुमानकवच पंचमुखी	)॥	सर्वदेवपूजन पद्धति	-)॥
गंगालहरी भा० टी०	=)	अष्टकअष्ट रत्न	)॥
गंगालहरी मूल	)॥	आर्षमादित्य हृदय	)।
दुर्गाकवच ३२ पेजी	)॥	संध्या यजुर्वेदी	-)
गोपालसहस्रनाम	=)	स्वस्तिवाचनपुण्याहवाचन	-)
विष्णुसहस्रनाम	=)	पूतनाशान्ति	=)
जिवितपुत्रिका व्रत	-)	गोदानपद्धति	)॥
कमलनेत्र स्तोत्र	)।		

पुस्तकों के मिलने का पता—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा बनारस सिटी।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri